Seventeenth Loksabha

an>

Title: Regarding Drought like Conditions in Uttar Pradesh

डॉ. संघमित्रा मौर्य (बदायूं): जैसा कि हम सब जानते है की हमारा देश एक कृषि प्रधान देश है ऐसे मे किसानों की चिंता करना हम सब का कर्तव्य है। विगत दिनों में प्रदेश में मौसम बिल्कुल भी अनुकूल नहीं रहा है जब बारिश की जरूरत नही थी उस समय में अतिवर्षा, ओलावृष्टि और जब बारिश की जरूरत है तब सूखा की स्थिति बनी हुई है ऐसे में धान, बाजरा की बुआई प्रभावित हो रही है। धान रोपाई का सीजन निकलता जा रहा है। अब तक अधिकतर किसान धान की पौध तक तैयार नहीं कर सके हैं। जिन खेतों में पौध को लगाया गया है, बह बारिश नहीं होने की वहज से सूख रही है। यदि हम मॉनसून की केवल जून और जुलाई की बात करें तो दो महीनों में 112 एमएम बारिश हुई है। वही हम पिछले कुछ सालों पर जून-जुलाई पर यदि नजर डालें तो वर्ष 2019 में 222.25 एमएम, वर्ष 2020 में 239.25 एमएम, वर्ष 2021 में 185.75 एमएम एवं वर्ष 2022 में 112 एमएम ही बारिश हुई है जो 2021 से लगभग 60 एमएम, 2020 से लगभग 127 एमएम और 2019 से लगभग 110 एमएम कम है।

इस बार मौसम विभाग ने अनुमान जताया था कि अच्छी बारिश होगी। समय पर मानसून भी आएगा। इससे किसानों के चेहरे खिल गए थे, लेकिन अपेक्षाकृत बारिश नहीं होने से किसानो के चेहरों पर उदासी दिख रही है। उनको काफी नुकसान हो रहा है। जून में किसानों को बेहतर बारिश की उम्मीद थी, जून में सामान्य वर्षा नहीं हुई तो लोगों को उम्मीद थी कि जुलाई में हो सकता है बारिश हो पर अब तक बारिश न होने से किसानों के माथे पर चिंता की लकीरें साफ दिखने लगी हैं।

यदि मैं अपनी लोकसभा की बात करूं तो पूर्व में अतिवर्षा होने के कारण मेरे लोकसभा क्षेत्र बदायूं जो कि भारत का मेंथा शहर के नाम से भी जाना जाता

है वहां मेंथा की फसल का अत्यधिक नुकसान हो चुका है और अब मेरे लोकसभा के साथ साथ पूरे उत्तर प्रदेश में सूखा की स्थिति बनी हुई है ऐसे में मैं यह चाहूगी कि किसानों के हुए नुकसान का केंद्रीय टीम द्वारा परीक्षण कराकर उनको उचित मुआवजा दिया जाए जिससे उनकी भरपाई की जा सकें।